[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3504

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मंच की आधुनिक तकनीक

श्रीमति राजेश्वरी शाह
0/53 टोपलेंड रेसीडेन्सी स्ट्रीट नं. 4 साधु वासवानी रोड (गुज.)

मंच का उद्भव तभी से प्रारंभ हुआ जब से नृत्य प्रारंभ हुआ। नृत्य जब भी होता है प्रेक्षक होते ही है। नाट्य शास्त्र के दूसरे अध्याय में रंग मंडप के प्रकार बनाए गए हैं। जिसमें ज्येष्ठ (बड़ा), मध्यम (ज्येष्ठ से छोटा), कनिष्ट (सबसे छोटा)। उस काल में मंच व्यवस्था का उत्तम विवरण मिलता है जिसमें दर्शकों के बैठने के लिए हॉल, स्टेज अर्थात् रंगभूमि उसके बाद नैपत्थ्य अर्थात ग्रीन रूम का भी वर्णन मिलता है। स्टेज पर दो प्लेटफार्म का भी वर्णन मिलता है। जिससे अलग–अलग दो दृश्य एक साथ देखे जा सकें।

यह मंच संस्कृति आगे चलकर लुप्त हेने लगी। मुगल काल तक खुले मंच का प्रयोग होने लगा। दरबारों में नृत्य होने लगा। जिससें मंच प्रदर्शन की विचार धारा पुरी तरह खतम होकर दरबारी नृत्यों में बदल गई।

अंग्रेजों के जमाने में थियेटर का आगमन हुआ। मंच के पाश्चात्य इतिहास में झाँके तो पता चलता है कि ग्रीक लोगों में सबसे पहले मंच का प्रयोग मनोरंजन के लिए कलात्मक प्रदर्शन हेतु होता था। धीरे–धीरे इसे दूसरे मुल्कों ने भी अपनाया। इंगलेण्ड में लगभग 1576 से 1642 के बीच का समय इनके विकास का महत्वपूर्ण समय माना जाता है। अंग्रेजों ने चुकि अपने मनोरंजन हमतु थीयेटरों की तकनिक का भारत में प्रयोग किया था। लेकिन थियेटरों की चकाचौंध नें कई लोगों को आकर्षित किया। पारसी थियेटरों ने तो भारतीय नाट्यों के प्रदर्शन के तरिकों को ही बदल दिया। जिस कार्य में परिवर्तन नहीं होता वह पीछे छुट जाता है। परिवर्तन प्रकृति का मूल है। इसे स्वीकारना और सँवारना हमारी जरूरत है। क्योंकि परिवर्तन ही तो विकास की इमारत में नींव का पत्थर हैं।

जहाँ एक ओर गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'जोड़ा साको थियेटर' बनाया। वहीं हमारी पुरानी परंपरागत रास लीला और रामलीला ने पारसी थीयेटरों से मंच प्रदर्शन की कला सीखली। बहुत सी बाँस की बल्लियों से बना स्टेज। दर्जनों पर्दे। जिसमें से कई पर तो चीत्रकारी की होती थी। महल, दरबार, जंगल, बाजार आदि दृश्य आसानी से खड़े कर दिए जाते थे। हर पर्दे के साथ उसी के नमुने की पखवाई होती थी। रस्सी से पकड़कर उसे गोल बना दिया जाता है। समय आने पर उसे खोल दिया जाता था।

स्टेज की इस पद्धति का जन्म इटली से माना जाता है। जहाँ "जैक्सकैलो" नामक चित्रकार ने पहली बार कपड़े पर इस प्रकार चित्र किए कि "त्रिसानो" नामक निर्देशक ने "सेफीनिस्बा" नामक नाटक की मंच प्रस्तुती में कई सारे विविध दृश्य खड़े कर दिए। बाद में यह पद्धति काफी विकसीत हुई। 19 वीं शताब्दी के अंत तक अनेंक देशों ने इसे अपना लिया। यही वह समय था जब "रॉबर्ट मुंडमेण्ड जोन्स" ने सन् 1920 में 'स्टेज क्राफ्ट' नामक कला को जन्म दिया। यह मंच व्यवज्ञथ की सबसे आधुनिक पद्धति के रूप में उभर कर आई। सन् 1946 में जब पृथ्वी राज कपूर ने पृथ्वी थियेटर्स की स्थापना की। उन्होंने पर्दों की पद्धति को दरकिनार कर 'सैट' लगवाए। जैसे की फिल्मों में बनते है। पृथ्वी थियेटर्स ने 16 साल तक सारे देश में भ्रमण कर दो हजार से अधिक प्रदर्शन किए। इसी दौरान भारत में भी स्टेज क्राफ्ट का प्रवेश हुआ। उधर 1940 में अल्मोड़ा में नृत्य–प्रशिक्षण का एक विशाल केन्द्र स्थापित किया गया। संस्थापक श्री उदय शंकर ने खुले मंच पर नृत्य–नाटिकाएँ प्रस्तुत की। जिसमें कलाकार को प्रधानता देकर स्टेज को गौण रखा गया। स्टेज पर प्रायः प्रतिकात्मक वस्तुओं का प्रयोग होने लगा। रूपसज्जा का विशेष महत्व जोर पकड़ने लगा।

कुल मिलाकर मंच व्यवस्था के इस उतार–चढ़ाव ने मंच व्यवस्था की आधुनिक तकनिक को जन्म दिया। जिसे स्टेज क्राफ्ट के नाम से जाना जाने लगा। इसके अंतर्गत कई सारी बातों को इकट्ठा कर लिया गया जो किसी भी मंचिय कार्यक्रम की प्रस्तुती अथवा नृत्य या नाट्य प्रयोग का आवश्यक अंग बनता था। इसकी विस्तृत चर्चा हम इन संदर्भों में कर सकते हैं –

1 प्रकाश योजना (स्टेज लाइट्स)
2 ध्वनी योजना (स्टेज साउन्ड)
3 मेकअप (रूप सज्जा)

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

4 प्रॉप्स (आवश्यक उपकरण)
5 परफार्मेन्स (कोरियोग्राफी)
6 टेक्निकल रिहर्सल

1. प्रकाश योजना –भारत में चुकि मंदिरों में रात्री के समय नृत्य प्रस्तुत किए जाते थे इसीलिए वहाँ रात्री के समय मशालों का प्रयोग कर प्रकाश व्यवस्था की जाती थी। पश्चिमी देशों में रंग – मंच का प्रयोग दीवस दौरान होता था अतः सूर्य की किरणों का प्रकाश व्यवस्था में उपयोग किया जाता था। आगें चलकर रंग दीपन के लिए गैस के हण्डों का प्रयोग हुआ। फिर बिजली अपने पर बड़े–बड़े बल्बों को रिफ्लैक्टर के साथ लगाकर मंच–प्रकाश की व्यवस्था की जाने लगी।

वर्तमान समय में तकनिकिय प्रगति ने मंच प्रकाश व्यवस्था को एक नया मोड़ दिया है। आजकल नए–नए प्रकार की लाइट्स – स्पॉट लाइट्स, डिन्कीज, सोलर, बेबीस्पॉट तथा फ्लड लाइट्स ने मंच प्रकाश को बहुत नयनारंभ बना दिया है। फ्लड लाइट में 500 या 1000 वॉट के साधारण बल्ब बड़े रिफ्लेक्टरों में लगाकर प्रयोग होते है। कुछ स्थानों पर मुल्यवान बल्बो विशेष प्रकार से जमाकर 'प्रोजेक्शन–लेम्प' के रूप में प्रयोग किया जाता है। प्रोजेक्शन लैम्प एक विशेष प्रकार के लोटे के चैम्बर में लगी रहती है जिसमे 'कन्डेन्सर लेंस लगे होते है। यह सारे प्रकाश को एकत्र कर एक विशेष बिंदू पर फैलाते है।' बड़े–बड़े रंग प्रदर्शन में किसी एक पात्र पर ही प्रकाश डालना हो। कटी फटी लाईट डालना हो। ऐसी क्रिया इन लाईटों से संपन्न होती है। स्टेज पर 'डिमर' मशीन का प्रयोग बहुतायत में होने लगा है। यह 0 से लेकर 500 वॉट तक प्रकाश देता है। कुछ पार्श्व लाइट भी होती है। ये 'फ्रन्ट लाइट' कहलाती है। जिससे कलाकार में आभा मंडल जैसा प्रकाश दिखलाया जा सकता है। फ्लड लाइट कलाकार के सीर पर होती है। आजकल L.E.D. तथा लेजर लाइट्स का प्रयोग बहुत ही बढ़ गया है। लेजर लाईट ने तो इतने चमत्कारिक दृश्य खड़े किए है कि नृत्य और अभिनय को गौण बनाकर किसी एक या दो कलाकार के साथ पूरी कथा व्यक्त करने की क्षमता का विकास कर लिया है। अहमदाबाद के स्वामीनारायण मंदिर में तो केवल लेजर लाइट शो देखने के लिए जन समुदाय एकत्र होता है। लाइट् का नियोजन एवं संचालन व्यवस्था में उत्तर भारत की 'कला भारती' संस्था लाइट्स इफैक्ट्स के लिए प्रशंसनिय कार्य कर रही है। भरतनाट्यम में 'नृत्य भारती' संस्था ने लाइट एवं साउन्ड के नियमन द्वारा कई नृत्य नाटीकाओं का प्रदर्शन किया है जो अत्यंत सराहनिय है।

2. ध्वनी योजना – जब लाऊड स्पीकर का अविष्कार नही हुआ था तब वाद्य वृंद स्वयं ही तीव्र आवाज निकाल कर प्रेक्षकों तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए विवश थे। लाऊड स्पीकर और माईक के अविष्कार ने ध्वनी व्यवस्था प्राथमिक सीढ़ी निर्मित की आगे चलकर ध्वनी योजना में माइक ने बहुत अच्छा विकास किया F.M. माईक ने जहाँ बिना नाट के मंच पर माईक की व्यवस्था कर दी। वहीं छोटे कालर माईक ने ड्रामा के कलकारों के लिए आवाज नियमन की नई प्रणाली को जन्म दिया। जिसमें संवाद को बहुत धीरें और प्रभावशाली रूप से प्रेक्षेकों तक पहुँचाया जा सकें। नृत्य के क्षेत्र में ध्वनी के विकास ने एक विशेष कार्य किया है जहाँ किसी भी नृत्य प्रस्तुति के लिए ढेर सारे वाद्य वृंद के साथ लंबा सफर तय करना पड़ता था। मंच पर 5–8 माइकों का इस्तेमाल करना पड़ता था। इन सभी लंबी प्रक्रियाओं का समाधान प्रिरिकार्डिग प्ररफार्मेंस में हो गया। स्टुडियो में रिकार्डिग हो जाती है। नर्तक स्वयं अपनी ही आवाज में रिकार्डिग कर मंच पर प्रदर्शन कर सकता है। डिजिटल रिकार्डिंग H.D. (हाई डेफिनेशन) साउन्ड ने दृश्यों का वास्तविक अनुभव कराने की क्षमता का विकास किया है। वर्तमान में तो कई शो केवल 'लाईट एण्ड साउन्ड' शो के नाम से ही भव्य नृत्य नाटिकाएँ प्रदर्शित कर रहें है। जिसमें 'महाराणा प्रताप' अविनाश खेर निर्देशित स्वामि विवेकानंद, भरत याग्नीक निर्देशित 'भारत की वीरांगनाएँ' ने अत्यधिक ख्याति प्राप्त की।

3. मेकअप (रूप सज्जा) – भारतीय नृत्य के सभी साहित्य में इसे 'आहार्य – अभिनय' के रूप में स्वीकारा है। प्रत्येक अंश के लिए विशेष वर्णन किया गया है। केश विन्यास से लेकर मुकुट आभूषण हाथ पैर का नख शिख वर्णन मिलता है। जो आगे चलकर सोलह श्रृंगार के रूप में प्रसिद्ध हुआ। पात्रों के अनुरूप रूप सज्जा हेतु स्त्री एवं पुरूष पात्र में मुख्य रूप से परिधान का जो अंतर होता है उसका विस्तृत वर्णन है। नायक के लिए नीला–पीला–केसरी आदि रंग तथा खलनायक के लिए लाल व काले रंग का प्रयोग आज भी ज्यों का त्यों है। कथकली में आहार्य अभिनय का विशेष महत्व है जिसमें नर्तकों को 12–12 घण्टे लग जाते हैं। इसमे 'चेट्टी' अर्थात् चावल के माण्ड का लेप लगाकर मेकअप किया जाता हैं। नर्तक आँखो के अंदर एक छोटा सा बीज दबा लेते है जिससे गहरे मेकअप के बावजूद आँखे बड़ी और उभरी हुई दिखती है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मध्यकाल के पश्चात् पाश्चात्य मंचिय व्यवस्था के भारत आने के साथ ही पाउडर, क्रीम, लिप्स्टिक, जिंक पाउडर का प्रयोग भारत में होने लगा। जो भौंहे, मुँछे कोयला घिसकर बनाई जाती थी अब वह आईलाइनर से बनती है। मोक्ष, रोली, घी, जौ आटा आदि वनस्पतियों से की जाने वाली रूप सज्जा अब फाऊन्डेशन, कॉम्पेक्ट पाउडर, आईशेडो, आईब्रो पेनसील आदि से होने लगी। रूप–विन्यास का संपूर्ण ज्ञान होना इसके लिए अत्यंत आवश्यक है।

मंचिय रूप सज्जा (स्टेज मेकअप) सामान्य मेकअप से भिन्न होता है इसीलिए इसका एक नियमित कोर्स भी अब चलन में है। गुजरात संगीत नाटक अकादमीने हाल ही में 1 से 5 अगस्त 2014 को मेकअप वर्कशॉप का आयोजन किया था जिसमें आहार्य अभिनय के नियम और उसके आधार पर वर्तमान में प्रचलित कॉस्मेटीक प्रसाधनों से रंग मंचिय रूप सज्जा का प्रशिक्षण किया गया।

रूपसज्जा का ही एक अंग वेशभूषा है। आजकल वेशभूषा में काफी नए प्रयोग हो रहे हैं। इसके लिए पारंपरिक परिधानो की परंपरा को विद्यमान रखते हुए भी नए और रोचक परिवर्तन कर मंच पर प्रस्तुत किए जा रहे है। रूपसज्जा और वेशभूषा जितनी रोचक होती है वह दर्शकों को उतना ही ज्यादा आकर्षित करती है। यही कारण है कि और सभी नृत्यों की अपेक्षा कथक में परिधान की विविधता और नए प्रयोग सर्वाधिक हो रहे हैं। और यही नृत्य एक ऐसा शास्त्रीय नृत्य है जो समस्त उत्तर भारत में या 75% भारतीय प्रांतो में ज्यादा प्रचलित है। क्योकि इसमें रूपसज्जा और परिधान में विशेष परिवर्तन की काफी छुट है। बावजूद इसके इसमें परंपरा यथावत रहती है।

4. प्राप्सः– संगीत और नृत्य के अलावा मंच पर कुछ आवश्यक उपकरण उपकरण भी वर्तमान में उपयोग में आने लगे हैं । जैसे छाउ आदि नृत्यों में मुखौटे,तलवार आदि का उपयोग होता है। आसानी नृत्यो में पखावज आदि मंच पर कलाकारों द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री है। प्रस्तुति को रोचक बनाने के लिये आजकल केवल आंगीक अभिनय ना करते हुए सचमुच का धनुष हाथ में देना। नायिका द्वारा पुष्प इकटठा करने हेतु सचमुच की थाली हाथ में लेना। ध्वजा, छतरी, तलवार आदि सबकुछ उपकरण अभिनय की अपेक्षा जिवंत बताए जाने लगे है। जो संम्हालने में आसान और वास्तविक भाव उत्पन्न करते है।

5. परफार्मेन्स :–(कारियोग्राफी)– 19वी शताब्दी में यह एक अनोखी कला के रूप में विकसित हुआ शब्द है जिसमें नृत्य को लिपिबद्ध करने की कला का विकास हुआ। रंग भूमि पर समुह नृत्य का सुनियोजन होने लगा। नाट्यशास्त्र में पिण्डबंध और रेचक का जो प्रयोग बताया गया है वही अब कोरियोग्राफी के रूप में स्वतंत्र कला बन गयी है। भरतनाट्यम गुरू इलाक्षी बहेन ठाकोर ने इसकला में विशेष निपुर्णता हासील कर समुह नृत्य प्रदर्शन के नए आयाम बनाए। वही कथक गुरू महाराज श्री बिरजू महाराज ने अंग काव्य नामक ग्रंथ की रचना कर कथक के प्रत्येक हस्तकों का नामकरंण कर नृत्य को लिपिबद्ध करना आसान बना दिया।

6. टेक्नीकल रिहर्सल :– आजकल हर एक नृत्य समारोह नाटक आदि प्रेक्षकों को दिखाने से पूर्व उसी प्रकार मंचित किये जाते है जिसे स्टेज रिहर्सल कहते हैं। स्टेज रिहर्सल का महत्वपूर्ण कारण यही है कि मंच पर इतने सारे तमाम साधनों को एक साथ इकटठाकर उसके प्रयोग कर परिक्षण कर लिया जाए। जिससे कि प्रदर्शन के समय किसी तृटि की संभावना न रह जाय। स्टेज क्राफ्ट की प्रत्येक विधा में प्रत्येक व्यक्ति का पारंगत होना संभव नही इसमें सभी अलग–अलग व्यक्ति अपनी कला में निपूर्ण होना आवश्यक है। साथ ही एक ही व्यक्ति का संपूर्ण कार्य संपन्न करना भी संभव नहीं। जैसे ध्वनि हेतु पारंगत व्यक्ति अपने साथ दो और व्यक्ति को मदद हेतु रखें। इसी प्रकार लाइट, मेकअप और कारियोग्राफी में भी व्यक्तियों की संख्या बढती जाती है। एक मंच प्रदर्शन में इन सभी अलग–अलग व्यक्तियों को मिलकर कार्य करना है अतः एक साथ मिलकर एक स्टेज रिहर्सल की जाती है और सभी के कार्य की जाँच कर ली जाती है, तब कहीं मंच की आधुनिक तकनिक का एकाकर स्वरूप उभर कर प्रेक्षकों तक पहुँचता है। और प्रत्येक प्रेक्षक अपने नयनाभिराम दृश्य कला के आगे नत मस्तक होकर बोल पडता है वाह! हाथ ताली बजाने को विवश हो जाते है। और आँखें रसास्वादन से तृप्त हो जाती है। यही है आधुनिक तकनिक का रंग मंच।